जागरण

चिप की कमी का स्थाई समाधान निकालने में जुटीं आटो कंपनियां, वैश्विक हालात से संकट फिर गहराने के आसार

देश में चिप की कमी को दूर करने के लिए आटोमोबाइल कंपनियों ने अपने स्तर पर स्थाई समाधान निकालने की कोशिश तेज कर दी हैं। क्या देश की आटोमोबाइल कंपनियों की रणनीति जानने के लिए पढ़ें यह रिपोर्ट...

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली। कोरोना महामारी काल के दौरान दुनियाभर में पैदा हुई सेमीकंडक्टर (चिप) की समस्या कम होनी शुरू ही हुई थी कि रूस-यूक्रेन युद्ध और चीन-ताइवान-अमेरिका के बीच पैदा हुए तनाव ने नई मुसीबत पैदा कर दी। ऐसे में देश की आटोमोबाइल कंपनियों ने चिप की कमी को दूर करने के लिए अपने स्तर पर स्थाई समाधान निकालने की कोशिश तेज कर दी हैं। टाटा मोटर्स के इंजीनियर जहां सिर्फ एक ही चिप के माध्यम से पूरी गाड़ी चलाने की सुविधा पर काम कर रहे हैं।

...ताकि चिप की निर्भरता में आए कमी

वहीं सबसे बड़ी कार कंपनी मारुति सुजुकी अपने वाहनों की डिजाइन पर काम कर रही है ताकि भविष्य में ज्यादा चिप की जरूरत ही नहीं पड़े। इसके अलावा हुंडई और महिंद्रा एंड महिंद्रा जैसी कंपनियां किसी एक स्रोत की जगह अलग-अलग चिप आपूर्ति करने वाले वेंडरों पर निर्भरता बढ़ा रही हैं। इसका फायदा यह मिलेगा कि अगर भविष्य में किसी एक देश में समस्या पैदा होती है तो पूरी आपूर्ति के लड़खड़ाने का खतरा नहीं रहेगा।

आपूर्ति अभी पूरी तरह से सामान्य

दैनिक जागरण ने सेमीकंडक्टर की मांग और आपूर्ति पर दूसरी कार कंपनियों से भी बात की और सभी का कहना है कि चिप की आपूर्ति में सुधार हुआ है और कार कंपनियों के स्तर पर कई कदम उठाए जा रहे हैं। हालांकि इसके बावजूद स्थिति सामान्य नहीं है। मसलन, ताइवान की कंपनियों की तरफ से आपूर्ति अभी पूरी तरह से सामान्य नहीं हुई है।

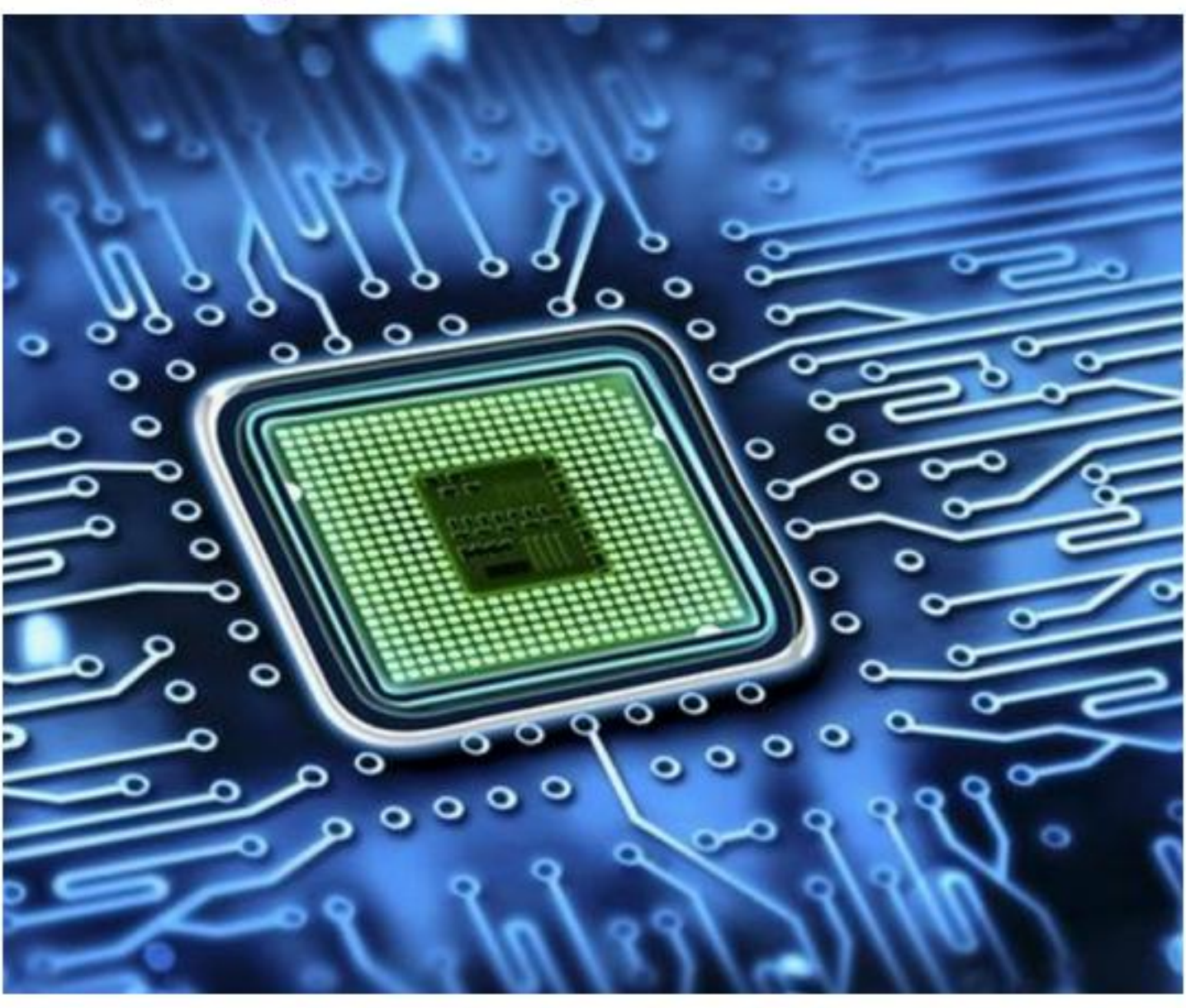

डिमांड बढ़ने से बढ़ी समस्या

मलयेशियाई कंपनियों ने आपूर्ति बढ़ाई है लेकिन उनके पास मांग इतनी ज्यादा है कि सभी को समय पर आपूर्ति करना उनके लिए असंभव हो रहा है। इस बीच रूस-यूक्रेन युद्ध को लेकर वैश्विक अनिश्चितता भी है जिसको लेकर चिप मैन्यूफैक्चरर्स बड़े निवेश नहीं कर रहे हैं।

जितनी प्रीमियम कार उतनी चिप की जरूरत

त्योहारी सीजन के शुरुआत में भारतीय आटोमोबाइल कंपनियों के पास आठ लाख कारों की बुकिंग थी जिनकी डिलीवरी उन्हें करनी हैं। किया मोटर्स, हुंडई, महिंद्रा एंड महिंद्रा जैसी कंपनियों के कुछ माडलों की आज बुकिंग करने पर आठ महीने से 12 महीने बाद की डिलीवरी मिलने की बात कही जा रही है। दरअसल एक कार में औसतन 50-150 चिप लगते हैं। कार जितनी प्रीमियम होगी उतने ज्यादा चिप की जरूरत होती है। अक्टूबर, 2023 से भारत में निर्मित हर कार में छह एयरबैग अनिवार्य किया जा रहा है जिससे भारतीय आटोमोबाइल उद्योग में चिप की मांग और बढ़ेगी।

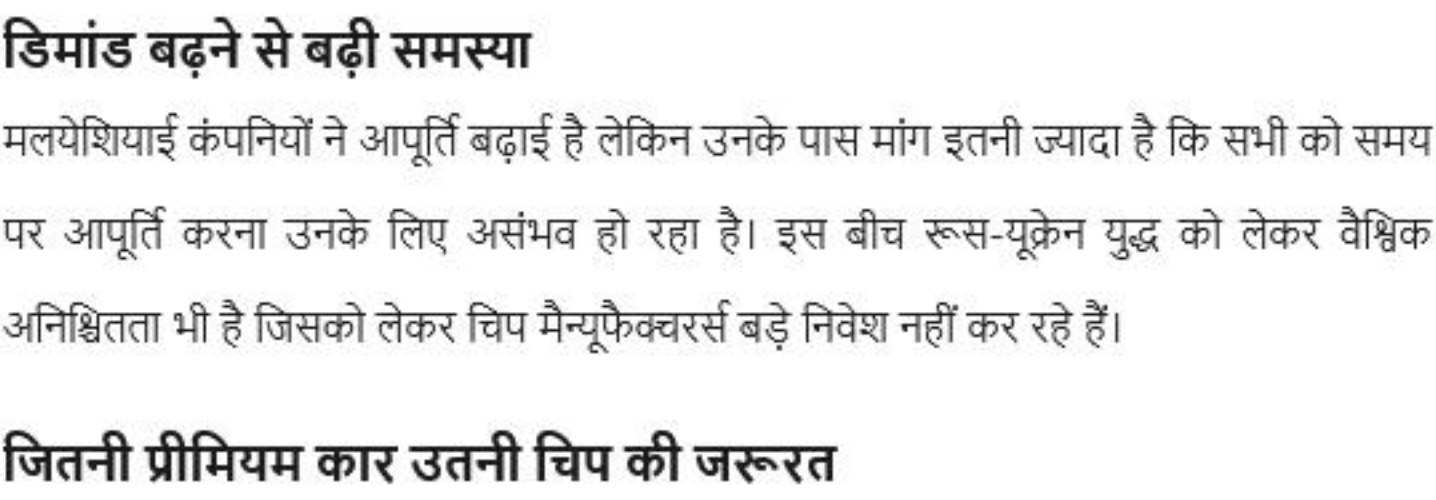

क्या एक ही चिप से पूरी गाड़ी चलाई जा सकती है..?

चिप की जरूरत को किस तरह से सीमित किया जाए और इसका वाहनों की ड्राइविंग या उसकी सुविधा पर कोई असर नहीं हो, यह एक इंजीनियरिंग पहलू है। हमारे सामने यह भी सवाल है कि क्या एक ही चिप से पूरी गाड़ी चलाई जा सकती है। - *शशांक श्रीवास्तव, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर, मारुति सुजुकी*

सभी कलपुर्जों की डिजाइन नहीं बदली जा सकती

शैलेश चंद्रा टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल के प्रबंध निदेशक शैलेश चंद्रा का कहना है कि कंपनी अपने कुछ कलपुर्जों की डिजाइन बदल रही है ताकि चिप की जरूरत कम हो। हालांकि यह काम सीमित स्तर पर ही हो सकता है। सभी कलपुर्जों की डिजाइन नहीं बदली जा सकती है। कंपनी के इंजीनियर भी पूरी कार के लिए एक ही चिप को तैयार करने में दिन-रात जुटे हैं। आटोमोबाइल सेक्टर के लिए केंद्रीयकृत चिप को तैयार करना एक संभावना है।